# सन्तों की परादृष्टि

१ अक्टूबर, २०१८

आत्मीय पाठकगण,

एक पेड़ है जो अक्सर पूर्वी अमरीका और कैनेडा के कुछ भागों में पाया जाता है। उसके पत्ते हृदय के आकार के होते हैं और पतझड़ आने के साथ-साथ पहले लाल, फिर नारंगी और उसके बाद सुनहरे पीले रंग के हो जाते हैं। इस पेड़ के पास से गुज़रते समय मैं हमेशा मुस्कराने लगती हूँ। इसकी शाखाओं से नन्हें-नन्हें हृदय की धाराएँ झर रही होती हैं, मानो रंगों का झरना इस ऋतु में हमारा स्वागत कर रहा हो।

फिर भी, मेरे लिए जो इससे भी अधिक मोहक होता है वह है, वह अकेला पत्ता जो पेड़ से टूटकर दूर गिरा होता है। आप जानते हैं मैं किसकी बात कर रही हूँ। या तो यह घास में छिप जाता है या फुटपाथ पर पड़ा होता है, संकुचित-सा, सादे-सरल भाव में, उसका मुख थोड़ा चित्तीदार हो जाता है और किनारे बड़ी मृदुलता से अन्दर की ओर मुड़ जाते हैं। तथापि सारतत्त्व में, यह वैसा ही रहता है जैसा यह हमेशा से था - एक हृदय।

इस सामान्य और साथ-ही असामान्य-सी दिखने वाली घटना में कई पहलुओं को समझा जा सकता है। यह कहानी हो सकती है, समय से परे भी अस्तित्व के होने की, उसकी जो प्राकृतिक तत्त्वों के नियमों का सम्मान भी करती है और साथ ही उन नियमों के परे भी है, उस अनश्वर जीवनशक्ति की जो इस जीवन को सच्चा अर्थ प्रदान करती है। इसी तरह, यह कहानी हो सकती है कृपा की, कि किस प्रकार कृपा सभी को अपने में आच्छादित कर लेती है, किस प्रकार कृपा उन स्थानों पर भी प्राप्त हो सकती है जो कदाचित सबसे अधिक अनपेक्षित लगते हैं।

यह बाबा जी का माह है, अक्टूबर का माह। वह समय जब हम बाबा जी की महासमाधि की वर्षगाँठ मनाते हैं, वह समय जब वे अपनी भौतिक देह का त्याग कर उस महान व्यापक चिति के साथ पूर्णरूप से एक हो गए जो प्रत्येक पौधे में, हरेक प्राणी में और इस ब्रह्माण्ड के प्रत्येक जड़ पदार्थ में स्पन्दित हो

रही है। बाबा जी ने २ अक्टूबर, १९८२ की पूर्णिमा को महासमाधि ली। इस वर्ष, चन्द्रतिथि के अनुसार बाबा जी की महासमाधि की वर्षगाँठ २४ अक्टूबर को है।

सिद्धयोग पथ के विद्यार्थियों के लिए यह एक परम्परा बन गई है कि इस समय हम अपने आस-पास की ऐसी अनेक चीज़ों पर विशेष ध्यान देते हैं जो कृपा का — बाबा जी की कृपा का स्मरण कराती हैं। इन्हें "बाबा जी के संकेत" कहा जाता है। इन संकेतों को समझकर, इस विशिष्ट समय में घटित होने वाली उन चीज़ों को पहचानकर, हम महसूस करते हैं कि बाबा जी हमारे साथ हैं। हम जानते हैं कि वे यहाँ हैं।

और हम इस एहसास के साथ कुछ कर सकते हैं — यही है जो सम्भवतः सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। और यदि हम ऐसा चाहें तो जो संकेत हमें दिखाई देते हैं, उन्हें हम अपनी साधना को प्रोत्साहित करने के रूप में ले सकते हैं, उन्हें उन स्मरणिकाओं के रूप में ले सकते हैं जो हमें श्रीगुरु की सिखावनियों का अभ्यास करते रहने का स्मरण कराती हैं, यह जानते हुए कि लक्ष्यप्राप्ति के लिए किए गए हमारे प्रयत्नों को अपरिमित सम्बल प्राप्त है। जब हम ऐसा करते हैं, और यही नहीं, जब हम ऐसे क़दम उठाते हैं तो कुछ विस्मयकारी घटित होता है। कृपा के प्रति हमारा दृष्टिबोध विस्तृत और रूपान्तरित हो जाता है।

गुरुमाई जी ने कई बार इस विषय में बताया है कि बाबा जी को नीलबिन्दु के विषय में सिखाना कितना प्रिय था। नीलबिन्दु, जो साधना का उत्कृष्ट लक्ष्य है, नील-प्रकाश का, तिल के बीजे के आकार का बिन्दु जिसमें समस्त ब्रह्माण्ड और उसके साथ हमारी एकात्मकता समाहित होती है। गुरुमाई जी ने कहा है कि 'नीलबिन्दु' बाबा जी का सर्वाधिक प्रिय अनुभव था। यह एक सुन्दर छवि है जिसे हम अपने बोध में बनाए रख सकते हैं और इस पर चिन्तन-मनन कर सकते हैं, विशेषकर इस वर्ष में, जब श्रीगुरुमाई का सन्देश है, 'सत्संग' अर्थात् 'सत्य की संगति।'

ध्यान में, अपने स्वप्नों में या अपनी जाग्रत अवस्था में नीलबिन्दु के दर्शन करने का अर्थ है सत्संग का अनुभव करना। इसका अर्थ है, अपनी सच्ची आत्मा से जुड़े रहना और उसी आत्मा को अपने आस-पास सभी में देखना। इसका अर्थ है, बाबा जी की सिखावनी, 'परस्पर देवो भव' के अर्थ को समझना, न केवल बौद्धिक रूप से बल्कि स्वतःस्फुर्त बोध द्वारा, अन्तः प्रज्ञा द्वारा समझना और अपने अंग-प्रत्यंग में, अपने रोम-रोम में इसका अनुभव करना, हर उस स्थान में अनुभव करना जहाँ आत्मा का वास हो सकता है।

मुझे हमेशा से ही बाबा जी के इन वर्णनों को सुनना और पढ़ना बहुत अच्छा लगता है कि वे किस तरह संसार को देखते थे। बाबा जी कहते थे कि जब कोई व्यक्ति उनके समक्ष आता तो पहले वे उसमें

नीलबिन्दु का दर्शन करते; हर वस्तु और हर व्यक्ति झिलमिलाते नीलप्रकाश का पुंज दिखाई देता। उनकी इस परादृष्टि के बारे में *सोचने* मात्र से ही मन आदर, श्रद्धा और विस्मय से भर उठता है। केवल इस तथ्य का विचार मात्र ही कि ऐसी परादृष्टि सम्भव है और यह परादृष्टि ही इस संसार की सच्ची वास्तविकता है, हममें विस्मय और कृतज्ञता के भाव जाग्रत हो उठते हैं। यह संतों की परादृष्टि है, वह वास्तविकता जिसकी अनुभूति करने के लिए वे हमें आमन्त्रित करते हैं।

अतः, अक्टूबर माह में 'सत्संग' के अपने अभ्यास को जारी रखते हुए, बाबा जी का स्मरण करें; उन्होंने जो सिखाया उसका स्मरण करें। जिस परादृष्टि को उन्होंने साधकों के अन्तर में जाग्रत किया उस पर अर्थात् नीलबिन्दु पर मनन करें। ठहरें और जुड़ जाएँ, बार-बार इसका अभ्यास करें, आपकी अन्तर की खोज घनीभूत हो पर इस कामना से नहीं कि आखों के पीछे आपको आतिशबाजियाँ देखना है बल्कि इसलिए कि आपको सच्ची ललक है यह जानने की, यह समझने की, इस उत्तर को पाने की कि "मैं कौन हूँ?"

***

*तुम कौन हो? मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आया हूँ?*[१]

ये प्रश्न महान ऋषि आदि शंकराचार्य जी ने 'चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्' में पूछे हैं। 'चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्' संस्कृत में एक स्तोत्र है जो वैदिक दर्शन पर आधारित है और यह सिद्धयोग आश्रमों में गाया जाता है। इस वर्ष के अपने सन्देश-प्रवचन में, गुरुमाई जी ने आदि शंकराचार्य जी के बारे में बताया था; शताब्दियों पहले, वे भारत के उन सन्तों में से एक थे जो पहली बार लोगों को सत्संग की सभाओं में एक साथ लाए थे।

जिन प्रश्नों को यहाँ आदि शंकराचार्य जी पूछ रहे हैं, ये वही प्रश्न हैं जिन्हें अनन्तकाल से, संत और ऋषि-मुनि पूछते आए हैं। ये प्रश्न युगों पूर्व भी प्रासंगिक थे और आज भी प्रतिध्वनित होते हैं, क्योंकि ये उस ललक को स्पष्टरूप से व्यक्त करते हैं जो अति गहन है, जन्मजात है, यह मानव के अस्तित्व का आधार है। सम्पूर्ण इतिहास में लोगों ने कई तरीक़ों से इन प्रश्नों के उत्तर का अन्वेषण किया है, और उनकी इस खोज का परिणाम हैं वे असाधारण रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ तथा यथार्थपूर्ण और ठोस कृत्य जिनसे शान्ति व सौहार्द को स्थापित किया जा सके।

सिद्धयोग पथ पर, यह हमारा अनन्त सद्भाग्य है कि उद्देश्य और अपनी पहचान की इस सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण यात्रा में हमें श्रीगुरु की कृपा और उनकी सिखावनियों का मार्गदर्शन प्राप्त है। *मैं कौन हूँ?* — यह अनन्तकाल से समृद्ध, गहन प्रश्न — वह शीर्षक है जो श्रीगुरुमाई ने बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि के सम्मान में होने वाले इस वर्ष के सिद्धयोग शक्तिपात ध्यान-शिविर के लिए प्रदान किया है।

शक्तिपात ध्यान-शिविर के महत्त्व का वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। ध्यान-शिविर के दौरान श्रीगुरु शक्तिपात दीक्षा प्रदान करते हैं यानी वह दिव्य जागृति जो आध्यात्मिक पथ पर हमारी साधना का शुभारम्भ करती है। बाबा जी ने चौवाँलीस वर्ष पहले, सन् १९७४ में शक्तिपात ध्यान-शिविर की रचना की। उसके बाद, बाबा जी और गुरुमाई जी ने सैकड़ों शक्तिपात ध्यान-शिविर आयोजित किए और अनगिनत हज़ारों लोगों को शक्तिपात प्रदान किया।

इस वर्ष का शक्तिपात ध्यान-शिविर विश्वभर में शनिवार, २७ अक्टूबर या रविवार, २८ अक्टूबर को आयोजित होगा। स्वामी शान्तानन्द के साथ प्रश्नोत्तरी के साथ-साथ इस विषय में अधिक जानकारी के लिए मैं आपको आमन्त्रित करती हूँ कि आप सिद्धयोग पथ की वेबसाइट देखें।

शक्तिपात ध्यान-शिविर में भाग लेने के साथ-साथ आप सिद्धयोग पथ की वेबसाइट द्वारा बाबा जी के इस माह का महोत्सव मना सकते हैं। अक्टूबर माह के मध्य, वेबसाइट पर बाबा जी के चन्द्र की वार्षिक फोटो गैलरी दिखाई जाएगी जिसमें चन्द्रमा के अपनी पूर्णता की ओर बढ़ने की तस्वीरें होंगी। आप भी अपने द्वारा ली गईं चन्द्रमा की तस्वीरें भेजकर इस गैलरी में अपना योगदान दे सकते हैं। वेबसाइट पर बाबा जी का एक वीडिओ भी पोस्ट किया जाएगा जिसमें बाबा जी ध्यान-शिविर के बारे में बता रहे हैं, साथ ही बाबा जी की सिखावनियाँ, उनकी तस्वीरों की दर्शन गैलरी, व इन्द्रियों को अन्तर की ओर मोड़ने के विषय में एक व्याख्या भी पोस्ट की जाएगी।

क्योंकि अक्टूबर नवरात्रि का माह भी है यानी देवी महाकुण्डलिनी शक्ति की आराधना और सम्मान के नौ दिवसीय महोत्सव का माह। वे महाकुण्डलिनी जिनकी शक्ति, शक्तिपात दीक्षा द्वारा हमारे अन्तर में जाग्रत की जाती है। इसलिए देवी के विभिन्न स्वरूपों में से कुछ स्वरूपों की उपासना करने में हमारी सहायता हेतु वेबसाइट पर सिखावनियाँ, स्तोत्र व नामसंकीर्तन होंगे। इस वर्ष नवरात्रि ९ अक्टूबर से १७ अक्टूबर तक है।

तो कुल मिलाकर, यह एक अतिविशेष समय है। पावन समय है। वह समय जब कृपा की उपस्थिति, वास्तविक रूपान्तरण को प्रेरित करने वाली अपनी रहस्यमयी व विस्मयकारी शक्ति के साथ बहुत ही

स्पष्टता से महसूस होती है; वह समय जब हमें यह प्रतीत होता है कि स्वयं के और अपने संसार के उत्थान हेतु कृपा को प्रकट होने देने का हमारा उत्तरदायित्व, अत्यावश्यक और प्राथमिक है। अक्टूबर में प्रवेश करने से कुछ दिन पूर्व श्रीमुक्तानन्द आश्रम में हमें इसका यानी कृपा का, प्रयत्न का और इन दोनों के संयुक्त प्रभावों का एक मधुर सुस्मरण मिला। ग्रीष्म ऋतु हमें अलविदा कह रही थी; पेड़ों ने रंग परिवर्तित करना आरम्भ कर दिया था। लेकिन फिर भी, सूरजमुखी के फूल आश्रम के सभी बगीचों और मैदानों में खिलना शुरू हो रहे थे! वे ठण्डी हवाओं के शुरू होने से ठीक पहले कुछ ही समय के लिए खिले थे, और बगीचे के जिस भाग में अन्य सूरजमुखी के पौधे लगाए गए थे, उससे काफ़ी दूर खिले थे। यह ऐसा था मानो सूर्यदेवता बस कुछ ही समय पूर्व यहाँ आस-पास टहल रहे थे और हम उन्हें देख नहीं पाए, लेकिन जहाँ-जहाँ भी उन्होंने अपने चरणकमल रखे थे, वहाँ-वहाँ ये पुष्प रंगबिरंगा, महकता पथ बनाते जा रहे थे।

बाद में मुझे पता चला कि आश्चर्यजनक रूप से आए ये सूरजमुखी के पौधे, आश्रम की भूमि पर गिलहरियों ने लगाए थे। जी हाँ — *गिलहरियों ने* । उन्होंने ये बीज उन स्थानों से एकत्रित किए थे जहाँ सूरजमुखी लगाए गए थे और उन पात्रों से जो पक्षियों को दाना खिलाने के लिए बगीचे में रखे गए थे। और फिर, मानो वे बगीचे के नए कर्तव्यनिष्ठ सेवाकर्ता हों, उन्होंने उन बीजों को सर्वत्र बिखेर दिया था — प्रकाश और सौहार्द लाते हुए — आश्रम की भूमि के सभी भागों के लिए और उन सभी के लिए, जो वहाँ से गुज़रते हैं।

आदर सहित,

ईशा सरदेसाई

---

[१] चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्, श्लोक १२, स्वाध्याय सुधा में से [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१६], पृष्ठ, १९५

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।